अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 02, (April-June 2022)

दलित उत्थान में दलित चेतना की भूमिका

डॉ अनिल कुमार सिंह
असिस्टेंट प्रोफेसर-हिंदी
राम सहाय राजकीय महाविद्यालय,बैरी, शिवराजपुर, कानपुर

जो मुक्ति संग्राम लड़ा था तुमने
वह जारी रहेगा उस समय तक
जब तक कि हमारे
मुरझाए पौधे के हिस्से का सूरज
उग नहीं जाता।

- कंवल भारती(तब तुम्हारी निष्ठा क्या होगी)

दलित-आंदोलन शोषण और उत्पीड़ित जनता के व्यापक मुक्ति आंदोलन की एक अनिवार्य कड़ी है। यह वर्ण व्यवस्था, जाति-भेद और अस्पृश्यता के नकार सहित सभी प्रकार के मानवीय शोषण के खिलाफ एक मुहिम है। इसका उद्देश्य दलितों को उनकी अस्मिता और अस्तित्व की पहचान कराना है। इसकी केंद्रीय मान्यता बाबा साहब आंबेडकर के इन शब्दों में निहित है-' मनुष्य सर्वोपरि है, दुनिया में मनुष्य से बढ़कर कोई चीज नहीं है।

दलित : अर्थ एवं परिभाषा-

'दलित' का शब्दकोशीय अर्थ है- जिसका दलन और दमन हुआ है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, कुचला हुआ, विनष्ट, मर्दित , पस्त हिम्मत, हतोत्साहित, वंचित आदि।(1)

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 02, (April-June 2022)

डॉक्टर श्यौराज सिंह बेचैन दलित शब्द की संवैधानिक व्याख्या करते हुए कहते हैं- 'दलित वह है जिसे भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति का दर्जा दिया गया है।'(2)

कंवल भारती 'दलित' अर्थ को अधिक स्पष्ट करते हुए लिखते हैं कि 'दलित' वह है जिस पर अस्पृश्यता का नियम लागू किया गया है, जिसे कठोर और गंदे कार्य करने के लिए बाध्य किया गया है, जिसे शिक्षा ग्रहण करने और स्वतंत्र व्यवसाय करने से मना किया गया और जिस पर सछूतों ने सामाजिक निर्योग्यताओं की संहिता लागू की, वही और वही दलित है और इसके अंतर्गत वही जातियां आती हैं जिन्हें अनुसूचित जातियां कहा जाता है।(3)

घनश्याम शाह अपने लेख 'अस्मिताओं का सह अस्तित्व' में 'दलित' का तात्पर्य निर्दिष्ट करते हुए लिखते हैं- 'दलित मराठी, गुजराती, हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं का एक प्रचलित शब्द है जिसका अर्थ है गरीब और उत्पीड़ित। लेकिन सामाजिक, साहित्यिक और राजनीतिक संदर्भ में दलित शब्द को एक भिन्न सांस्कृतिक अर्थ मिल जाता है। आंदोलन और साहित्य के साथ दलित शब्द जोड़ने से एक भिन्न समझ का संप्रेषण होता है। इस विशिष्ट संदर्भ में सबसे पहले इस शब्द का इस्तेमाल 70 के दशक की शुरुआत में बाबा साहब आंबेडकर के नव बौद्ध अनुयायियों ने किया। इसमें अंतर्निहित था कि जिसे तोड़ दिया गया है और जिसे उसके सामाजिक दर्जे से ऊपर बैठे लोगों ने जानबूझकर नियोजित रूप से कुचल डाला है। इस शब्द में छुआछूत। कर्म-सिद्धांत और जातिगत श्रेणीक्रम का नकार निहित है।(4)

मोहन नैमिशराय 'दलित' शब्द को और अधिक विस्तार देते हुए कहते हैं- 'दलित शब्द मार्क्स प्रणीत शब्द 'सर्वहारा' के समानार्थी लगता है लेकिन इन शब्दों में पर्याप्त भेद भी है। दलित शब्द की व्याप्ति अधिक है तो सर्वहारा की सीमित। दलित के अंतर्गत सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक शोषण का अंतर्भाव होता है तो सर्वहारा केवल आर्थिक

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 02, (April-June 2022)

शोषण तक ही सीमित रहता है। प्रत्येक दलित व्यक्ति सर्वहारा के अंतर्गत आ सकता है लेकिन प्रत्येक सर्वहारा को दलित कहने के लिए बाधित नहीं हो सकते अर्थात सर्वहारा की सीमाओं में आर्थिक विषमता का शिकार वर्ग आता है जबकि दलित विशेष तौर पर सामाजिक विषमता का शिकार होता है।(5)

उपरोक्त परिभाषाओं के आधार पर निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि 'दलित वर्ण व्यवस्था के अनुसार विभाजित समाज के सबसे निचले पायदान का सदस्य है जिस पर जन्मना कुछ सामाजिक निर्योग्यताएं आरोपित की गई और उसके स्वाभाविक विकास के नैसर्गिक मार्ग को अवरोधित कर दिया गया इन्हें अछूत और अन्त्यज की श्रेणी में रखा गया और जाति के आधार पर उनका दलन तथा शोषण किया गया।'

दलित चेतना : स्वरूप और विशेषताएं

भारत में हमेशा दो संस्कृतियां पनपती रही हैं -एक सवर्ण अर्थात अभिजन और दूसरी अवर्ण अर्थात दलित। अभिजन संस्कृति ने मानवता का अर्थ और मानव संवेदना का दायरा केवल कुछ जातियों तक ही सीमित रखा, अतिरिक्त अधिकार प्राप्त किये और बाकी जन समूह को अधिकार विहीन बनाकर दासता से बदतर पशुतुल्य जीवन जीने को बात ही नहीं किया, उनकी संवेदना को जड़ बनाकर उन्हें उसी में संतुष्ट रहना सिखाया।(6) अतः स्वाभाविक है कि जब अभिजन और दलित के जीने का ढंग, सोचने की प्रक्रिया, बोलने की शैली यहां तक की दोनों की संस्कृति अलग-अलग है और उनके रिश्ते की भी पूर्ण परिभाषा (भाग्यवादी परिभाषा) बदल गई है और वह एक शोषक और शोषित के रिश्ते में बदल गई है जिसमें एक को अधिकार संपन्न का दर्जा प्राप्त है दूसरे को अधिकार विहीन का तो दोनों का दृष्टिकोण और चिंतन सामान नहीं हो सकता।(7) जैसा की एक टिप्पणी में प्रेमचंद ने कहा है- संस्कृति अमीरों का, पेट भरो का, बेफिक्रों का व्यसन है। दरिद्रों के लिए प्राण रक्षा ही सबसे बड़ी समस्या है। उस संस्कृति में था

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 02, (April-June 2022)

क्या जिसकी वह रक्षा करें। जब जनता मूर्छित थी तब उस पर धर्म और संस्कृति का सम्मोहन छाया हुआ था। ज्यों-ज्यों उसकी चेतना जागृत होती है वह देखने लगती है कि यह संस्कृति लुटेरों की संस्कृति थी, जो राजा बनकर, विद्वान बनकर, जगत सेठ बनकर जनता को लूटती है। ऐसी सांस्कृतिक विरासत का विरोध करना दलित चेतना के सरोकारों में शामिल है। (8)

दलित की व्यथा-वेदना और शोषण के अश्रु विगलित भाव का वर्णन ही दलित चेतना नहीं है बल्कि दलित चेतना के गहरे सरोकार अस्तित्व और अस्मिता के सवालों से जुड़े हुए हैं। सही अर्थों में यह संघर्ष से नाता रखने वाली क्रांतिकारी मानसिकता है। मनुष्य को केंद्र मानकर जाति व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करने वाली यह प्रतीति है। इस चेतना की प्रेरणा बाबा साहब आंबेडकर की सोच में है। दलित चेतना गुलाम को गुलामी से अवगत करा देती है।(9) इस रूप में यह मनुष्य की मुक्ति की चेतना है जो वर्ण-व्यवस्था, जाति-भेद और अस्पृश्यता के नकार सहित सभी प्रकार के मानवीय शोषण के खिलाफ एक मुहिम है।

इस चेतना का वैचारिक आधार महात्मा बुद्ध, ज्योतिबा फुले, पेरियार और बाबा साहब आंबेडकर के व्यक्तित्व से निर्मित है। इस चेतना का वैचारिक आधार महात्मा बुद्ध, कबीर, रैदास, ज्योतिबा फुले और ई वी रामास्वामी पेरियार के व्यक्तित्व और कृतित्व से निर्मित है। किंतु यह चेतना अपनी मुख्य ऊर्जा डॉक्टर भीमराव आंबेडकर के जीवन दर्शन से ग्रहण करती है। चेतना विचार की आधारशिला है और यह जागृत मस्तिष्क में ही संभव है इसीलिए बाबा साहब ने कहा था- 'जागृति की अग्नि को जलाए रखो तथा विचार में परिवर्तन हुए बगैर आचरण में परिवर्तन नहीं हो सकता।' साथ ही उन्होंने 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में बौद्ध धर्म में दीक्षित होने के पश्चात अपने लाखों अनुयायियों को जो 22 प्रतिज्ञाएं(10) करवाई थीं उनमें भी धार्मिक पाखंड और अंधविश्वास का निषेध तथा समता, स्वतंत्रता और भ्रातत्व जैसे मानवीय मूल्य निहित

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 02, (April-June 2022)

हैं। इन प्रतिज्ञाओं का विश्लेषण करने पर ज्ञात होता है कि ये दलित चेतना का प्रमुख आधार हैं।

दलित चेतना की विशेषताएं

दलित चेतना की प्रमुख विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है-

1- **मुक्ति और स्वतंत्रता के सवालों पर डॉक्टर आंबेडकर के दर्शन को स्वीकार करना**

2- **बुद्ध का अनिश्वरवाद,अनात्मवाद, वैज्ञानिक दृष्टिकोण पाखंड, कर्मकांड का विरोध**

3- **वर्ण-व्यवस्था विरोध, जाति-भेद विरोध, सांप्रदायिकता विरोध**

4-**अलगाववाद का नहीं भाईचारे का समर्थन**

5- **स्वतंत्रता, सामाजिक न्याय की पक्षधरता**

6-**सामाजिक बदलाव के लिए प्रतिबद्धता**

7- **आर्थिक क्षेत्र में पूंजीवाद का विरोध**

8- **सामंतवाद ब्राह्मणवाद का विरोध**

9- **अधिनायकवाद का विरोध**

10- **पारंपरिक सौंदर्य बोध का विरोध**

11- **वर्णविहीन, वर्गविहीन समाज की पक्षधरता**

12-**भाषावाद, लिंगवाद का विरोध**(11)

दलित चेतना की केंद्रीय चिंता 'जाति' है क्योंकि यह एक ऐसा दैत्य है जो दलितों के हर रास्ते में आतंकपूर्ण अवरोध बनकर खड़ा है इसलिए दलित चेतना जाति व्यवस्था को न केवल प्रश्नाकित करती है बल्कि उसे समूल विनष्ट कर देने की चाह रखती है क्योंकि यह विभेद का सबसे पहला हथियार है। जैसा कि 'दर्द के दस्तावेज' में प्रेम शंकर ने लिखा है-

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 02, (April-June 2022)

वे सभ्य हैं
आदमी से हाथ मिलाने के बाद
वे हाथ धोते-मांजते हैं,
और फिर
मुस्कुरा कर कहते हैं- हम एक हैं
फिर हाथ धोते हैं ताकि हाथ में आदमी की
जाति न छप गई हो।(12)

दलित चेतना परंपरागत सौंदर्य बोध को स्वीकार नहीं करती जो मानसिक विलासिता और सुख के अतिशय संग्रहण का परिणाम है। इसके विपरीत दलित सौंदर्यबोध एक सामाजिक मूल्य है जो श्रमशील संस्कृति और उसके केंद्र में स्थित मनुष्य के कर्म से उपजा है इसलिए यह परंपरागत 'सत्यम शिवम सुंदरम' की नई व्याख्या करते हुए मनुष्य को केंद्र में रखकर तीन सूत्र प्रस्तावित करती है-
मनुष्य सर्वप्रथम मनुष्य है ,यही 'सत्य' है।
मनुष्य की स्वतंत्रता ही 'शिव' है।
मनुष्य की मनुष्यता ही 'सौंदर्य' है।(13)

दलित चेतना निष्क्रियता का महाकाव्य नहीं रचती अपितु अमानवीय सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध जन- गण को सशक्त, सक्रिय और कर्मशील बनाती है। यहां तटस्थता का छद्म नहीं न्याय और बदलाव की लड़ाई में सक्रिय सहभागिता का संकल्प है।

अब भूखे पेट की कराहें,खाली हाथ तक आकर
पत्थर में बदल गई है है जो सीधे तना है-
व्यवस्था के शीश महल की तरफ।(14)

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 02, (April-June 2022)

इस प्रकार दलित चेतना की सबसे पहली शर्त है उसका विरोध का स्वर, पीड़ा की छटपटाहट, आक्रोश का तेवर और उसके साथ ही कहीं परिवर्तन के लिए उगता हुआ एक संकल्प है।(15) **जैसा कि भागीरथ मेघवाल अपनी 'दलित चेतना' शीर्षक कविता में लिखते हैं-**

वक्त के सामने
दीवार बनकर खड़े मत रहो
लकीर के फकीर बनाकर अड़े मत रहो
बंदरिया के लिपटाए रखने से
उसका मरा बच्चा जी तो नहीं जाता।

तमाम अवरोधों के बावजूद एक आंदोलन के रूप में खड़ा होना निश्चित रूप से दलित चेतना की एक बड़ी उपलब्धि है।

संदर्भ सूत्र

1-**कर्दम डॉक्टर जयप्रकाश--दलित विमर्श साहित्य के आईने में प्रश्न संख्या** 17
2-**बेचैन डॉक्टर शिवराज सिंह--युद्ध आम आदमी** (**अंक** 41-42) 1998 **पृष्ठ** 14
3-**भारती कंवल--युद्ध आम आदमी**, **अंक** 41-42, 1998, **पृष्ठ** 41
4-**दुबे अभय कुमार--आधुनिकता के आईने में दलित**, **पृष्ठ संख्या**196
5-**नैमिशराय म्ममोहनदास--साहित्य और संस्कृति में दलित अस्मिता और पहचान का सवाल**, **नया पथ**, **अंक** 24-25, **जुलाई-सितंबर** 1997, **पृष्ठ संख्या** 104-05
6-**गुप्ता रमणिका--दलित चेतना साहित्यिक और सामाजिक सरोकार**, **पृष्ठ संख्या** 50
7-**उपरोक्त पृष्ठ संख्या** 21
8-**वाल्मीकि ओमप्रकाश--दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र पृष्ठ संख्या** 28
9-**लिंबाले शरण कुमार--दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र पृष्ठ संख्या** 40

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 02, (April-June 2022)

10-**कर्दम जयप्रकाश--दलित विमर्श साहित्य के आईने में**, **पृष्ठ संख्या** 13

11-**वाल्मीकि ओमप्रकाश-- दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र**, **पृष्ठ संख्या** 31

12-**प्रेमशंकर--दर्द के दस्तावेज पृष्ठ संख्या** 24

13-**लिंबाले शरण कुमार--दलित साहित्य का सौंदर्य शास्त्र पृष्ठ संख्या** 31

14-**सिंह डॉक्टर एन-- दर्द के दस्तावेज पृष्ठ संख्या** 123 15-**गुप्ता रमणिका--दलित चेतना साहित्यिक और सामाजिक सरोकार पृष्ठ संख्या** 104